तलफे तारुनी रे

तलफे तारुनी रे, दुलही को दिल दे ।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले।।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव।।

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।